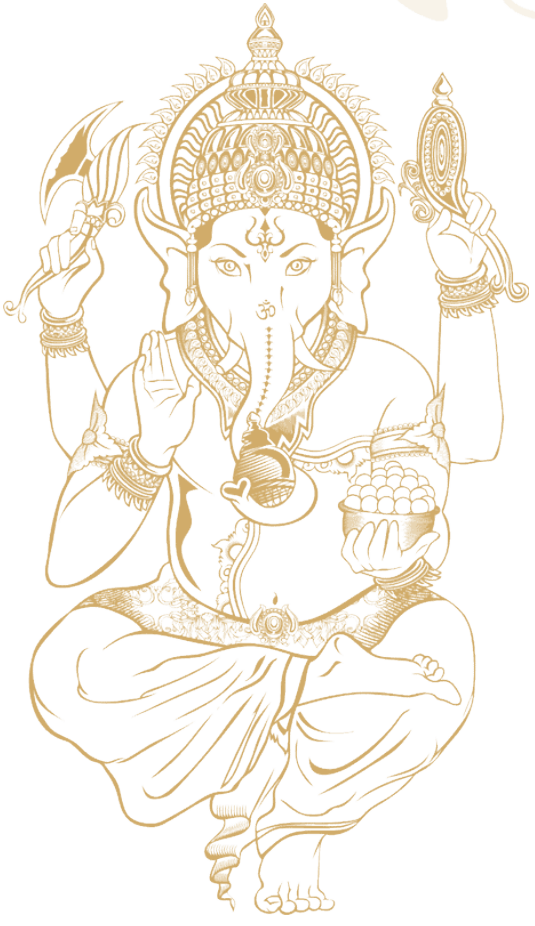

Mr.aditya dhingra

Ms.niralin

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119712508

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
19/07/1995	जन्म तिथि	14/03/1997
बुधवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 12:51:00	जन्म समय	21:45:00 घंटे
घटी 18:10:05	जन्म समय(घटी)	38:01:20 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Panipat
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	29:24:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	76:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:22:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:57	सूर्योदय	06:33:36
19:19:25	सूर्यास्त	18:29:35
23:47:51	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:05

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 8मा 12दि	06:02:30	तुला	लग्न	तुला	13:30:55	चन्द्र 6वर्ष 6मा 1दि
सूर्य	02:22:42	कर्क	सूर्य	मीन	00:18:34	राहु
01/04/2022	00:34:11	मेष	चंद्र	वृष	14:39:34	15/09/2010
31/03/2028	04:58:45	कन्या	मंगल व	कन्या	03:59:09	15/09/2028
सूर्य 19/07/2022	22:16:29	मिथु	बुध	मीन	03:12:44	राहु 28/05/2013
चन्द्र 18/01/2023	12:03:00	वृश्चि व	गुरु	मक	17:52:22	गुरु 22/10/2015
मंगल 26/05/2023	23:23:18	मिथु	शुक्र	कुंभ	25:32:16	शनि 28/08/2018
राहु 18/04/2024	00:48:55	मीन व	शनि	मीन	14:24:21	बुध 16/03/2021
गुरु 05/02/2025	07:48:32	तुला व	राहु	कन्या	04:56:01	केतु 04/04/2022
शनि 17/01/2026	07:48:32	मेष व	केतु	मीन	04:56:01	शुक्र 04/04/2025
बुध 24/11/2026	04:47:42	मक व	हर्ष	मक	13:27:11	सूर्य 26/02/2026
केतु 01/04/2027	00:18:30	मक व	नेप	मक	05:30:52	चन्द्र 28/08/2027
शुक्र 31/03/2028	04:07:52	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	11:46:26	मंगल 15/09/2028

लग्न-चलित

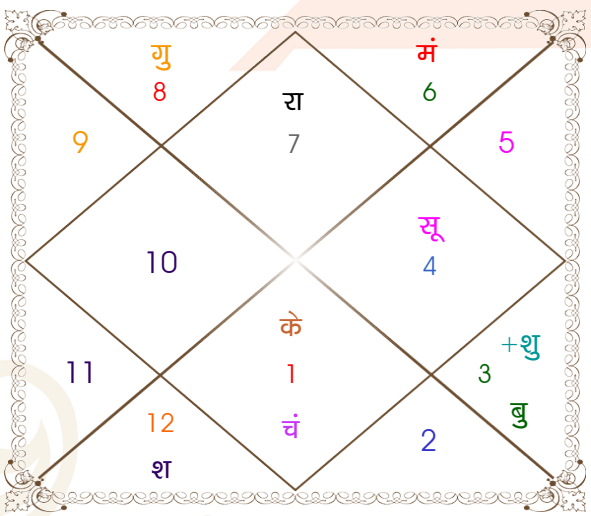

लग्न-चलित

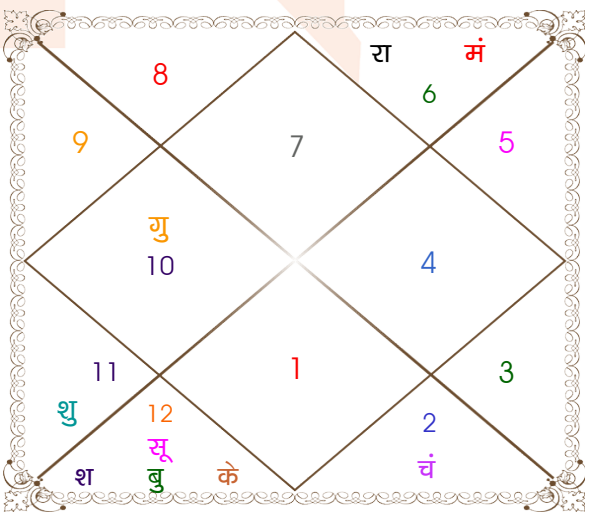

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शुक्र	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	वृष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

Mr.aditya dhingra का वर्ग सिंह है तथा Ms.niralin का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr.aditya dhingra और Ms.niralin का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr.aditya dhingra मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Mr.aditya dhingra कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms.niralin मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms.niralin कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Ms.niralin कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Ms.niralin कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Ms.niralin कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr.aditya dhingra कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr.aditya dhingra तथा Ms.niralin में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।